भारत की महान महिलाएं

इन्दिरा गांधी



भारत की महान महिलाएं

इंदिरा गांधी



डायमंड बुक्स

eISBN: 9789352781485

प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोन: 011-40712100, 41611861
फैक्स: 011-41611866
ई-मेल: ebooks@dpb.in
वेबसाइट: www.diamondbook.in
संस्करण: 2017
इंदिरा गांधी
By: Renu Saran

विषय सूची

परिचय

भारतीय इतिहास भारत की एकमात्र महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी का गवाह रहा है। वे भारत की तीसरी प्रधानमंत्री तथा पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की पुत्री थीं। वे अपनी विद्वता, आकर्षक व प्रभावशाली व्यक्तित्व के बल पर देशवासियों के दिलों पर राज करती थीं।

इंदिरा गांधी दूरदर्शी, कल्पनाशील और दृढ□ संकल्प वाली महान महिला थीं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय किसी भी मामले पर गहन विचार-मंथन करने और समय के अनुसार उचित निर्णय पर पहुंचने की उनमें अद्भुत क्षमता थी।

बैंकों का राष्ट्रीयकरण, भूमि सुधार, पोखरण में आणविक विस्फोट, अंतरिक्ष में उपग्रह स्थापना और बीस सूत्रीय कार्यक्रम उनके महत्त्वपूर्ण कार्यों में से हैं।

एक ओर इंदिरा गांधी राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर समस्याओं से जूझती रहीं, दूसरी ओर उन्होंने देश को विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में नई मंजिलों की ओर बढ□ाया। उनके प्रधानमंत्री-काल में विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में हुई उन्नति ने दुनिया-भर को अचम्भित कर दिया था।

आज इंदिरा जी हमारे बीच नहीं हैं, किंतु उनका चिंतन, उनके विचार और उनके कार्य आने वाली पीढि□यों को सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

जन्म और बचपन के दिन

इंदिरा जी का जन्म 19 नवंबर, 1917 को इलाहाबाद में हुआ था। माता कमला नेहरू व पिता जवाहरलाल नेहरू उनके जन्म पर फूले नहीं समाए। इंदिरा के दादा जी मोतीलाल नेहरू एक प्रसिद्ध वकील व जानी-मानी हस्ती थे।

राजनीतिक वातावरण व बचपन

उनके जन्म के समय दादी स्वरूपरानी ने कहा था, “मैं तो सोच रही थी कि लड□का पैदा होगा, पर हमारे यहां तो लड□की ने जन्म लिया है।” यह सुनकर मोतीलाल क्रोध से बोले, ‘‘मेरे लिए लड□का-लड□की में कोई अंतर नहीं है।” वे अपनी पोती को इंदिरा कहते थे। माता-पिता ने इंदिरा के आगे प्रियदर्शिनी भी जोड□ दिया, क्योंकि वे दिखने में खूबसूरत गुडि□या जैसी थीं।

पिता के राजनीति में प्रवेश के बाद नन्ही इंदिरा को 3-4 वर्ष की आयु से ही राजनीतिक माहौल मिला। उनका घर राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र था। सभी राजनेता इलाहाबाद आने पर वहीं ठहरते थे। महात्मा गांधी भी प्राय: उनके पिता से मिलने आते थे। इंदिरा उनके विचारों से बहुत प्रभावित थीं।

इंदिरा का बचपन आनंद भवन के राजनीतिक वातावरण में बीता। मोतीलाल जी ने जवाहरलाल नेहरू जी के लिए नया घर बनवाया, जिसे स्वराज भवन का नाम दिया गया।



इंदिरा में बचपन से ही देशप्रेम की भावना कूट-कूटकर भरी थी। एक दिन उन्होंने पिता को विदेशी कपड□ एकत्र करते देखा। उन्होंने पूछा-आप ये कपड□ क्यों इकट्ठे कर रहे हैं?

"मैं इन्हें जलाने जा रहा हूं। आगे से हम ऐसे वस्त्र कभी नहीं पहनेंगे। हमें देश में बने खादी के कपड□ ही पहनने चाहिए।" जवाब मिला।

यह सुनकर इंदिरा ने भी अपने वस्त्रों की भी होली जला दी और सदा के लिए खादी वस्त्र पहनने का फैसला किया।

प्रारंभिक शिक्षा

जब इंदिरा पांच वर्ष की थीं तो उनके पिता व दादा जेल में थे। वे उन दिनों स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा ले रहे थे। वहां इंदिरा की पढ□ाई की देख-रेख करने वाला कोई न था। उनके घर नेताओं का जमघट लगा रहता था।



इंदिरा के लिए एक अध्यापक रखा गया। जो उन्हें पढ□ाने आता, पर इंदिरा को पिता व दादा के बिना अकेलापन महसूस होता था।

जवाहर नियमित रूप से जेल से पुत्री को पत्र लिखते थे। वे उन्हें पत्रों द्वारा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की घटनाओं की जानकारी देते थे। उन्होंने इंदिरा को यह भी बताया कि उन्हें कौन-कौन सी अच्छी पुस्तकें पढ□नी चाहिए।

मां के साए में

इंदिरा का अधिकतर बचपन मां के साए में बीता। उन्हें अपने पिता के साथ अधिक समय बिताने का अवसर नहीं मिला, क्योंकि उनका अधिकतर समय जेल में बीतता था।

एक बार नेहरू जी ने पुत्री को जेल से पत्र लिखा- 'तुम बहुत भाग्यवान हो कि तुम्हें इतनी देख-रेख करने वाली मां मिली हैं। तुम्हारे हर मुश्किल वक्त में मां तुम्हारा साथ देती हैं। तुम्हें उन्हें मां के बजाय एक अच्छी सखी मानना चाहिए।'



कमला आत्मविश्वासी महिला थीं। इंदिरा उनके गुणों से बेहद प्रभावित थीं, पर कमला अधिक समय तक स्वस्थ नहीं रह पाईं। अस्वस्थता के कारण वे इंदिरा के सारे कार्य नहीं कर पाती थीं।

इंदिरा आठ वर्ष की हुईं तो कमला की सेहत और भी खराब हो गई। उनकी अस्वस्थता के कारण नेहरू जी को जेल से रिहा किया गया। उन्होंने पत्नी को लखनऊ के अस्पताल में भरती करवाया, किंतु डॉक्टरों ने कहा कि वे पत्नी को इलाज के लिए स्विटजरलैंड ले जाएं।

जवाहरलाल रोगी कमला के साथ जहाज पर सवार होकर जेनेवा चले गए, इंदिरा भी साथ गईं।

अच्छी मेडिकल सुविधाओं व स्वस्थ वातावरण के कारण कमला की दशा में सुधार होने लगा। इस दौरान इंदिरा ने कुछ दूसरे देशों की यात्राएं भी कीं। वे पिता के साथ लंदन, पेरिस व बर्लिन गईं।

वानर सेना

अब कमला की दशा में सुधार था और इंदिरा ग्यारह वर्ष की हो चुकी थीं। वे भी पिता व दादा जी की तरह देश की सेवा करना चाहती थीं, पर एक अबोध बालिका समझकर किसी ने भी उनका हौसला नहीं बढ□ाया। वे इससे बिल्कुल भी हतोत्साहित न हुईं। उन्होंने आस-पास के बच्चों को बुलाकर एक भाषण दिया।

इंदिरा ने तय किया वे बच्चों की सहायता से एक संगठन तैयार करेंगी। वे जी-जान से अपने देश की सेवा करना चाहती थीं। उन्होंने आस-पास के साहसी बच्चों को इकट्ठा करके एक संगठन बनाया और इस संगठन का नाम रखा गया ‘वानर सेना’। धीरे-धीरे करीब छः हजार बच्चों ने इसकी सदस्यता ग्रहण कर ली।

वानर सेना कांग्रेस के लिए काम करने लगी। बच्चे कांग्रेस के पर्चे बांटते व घायलों की सेवा करते। यह सब देखकर जवाहरलाल को लगा कि इंदिरा देश के माहौल के हिसाब से स्वयं को तैयार कर रही है।

इंदिरा का बचपन बीत रहा था और राजनीतिक हलचल बढ□ती जा रही थी। वे कभी एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने देती थीं। खाली समय में वे चरखा चलाती।



जब गांधी जी ने नमक सत्याग्रह के लिए दांडी यात्रा आरंभ की तो इंदिरा के दादा व पिता ने सक्रिय रूप से इसमें भाग लिया। अंग्रेजों ने इन सबको गिरफ्तार करके जेल भेज दिया।

जेल से ही दी शिक्षा

इंदिरा एक बार फिर घर में अकेली रह गईं। जवाहरलाल को उनकी पढ□ाई की चिंता सता रही थी। वे अक्सर अपनी बेटी को पत्रों के माध्यम से देश के इतिहास की जानकारी देते थे। उन्होंने पुत्री के मन में भारतीय संस्कार भर दिए जिन्हें वे कभी नहीं भूलीं।

जवाहरलाल ने उनके हृदय में सत्य की ज्योति जगा दी, जिसने सदा इंदिरा को सच्चाई पर चलने की प्रेरणा दी। जवाहरलाल की यह प्रेरणा इंदिरा के लिए काफी सार्थक रही। जवाहरलाल द्वारा इंदिरा को भेजे गए ये पत्र राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी लोकप्रिय हुए।

दादा जी का निधन

जेल में मोतीलाल जी दमे का शिकार हो गए, इसलिए अंग्रेजों ने उन्हें रिहा कर दिया। वे इलाज के लिए मंसूरी चले गए, सारा परिवार उनके साथ था। इंदिरा भी थीं, आनंद भवन में कमला अकेली थीं।

जब जवाहरलाल रिहा हुए तो वे भी कमला सहित मंसूरी चले गए, ताकि पिता की देख-रेख कर सकें। वहां मोतीलाल जी की हालत में सुधार हुआ, पर इलाहाबाद जाते ही वे फिर से बिस्तर पर पड□ गए।

इस बार अच्छी-से-अच्छी चिकित्सा भी असफल रही और फरवरी, 1931 में उन्होंने प्राण त्याग दिए।

स्कूली शिक्षा

नेहरू परिवार शोक संतप्त था। इंदिरा को सदा प्रेरित करने वाला एक आदर्श व्यक्तित्व नहीं रहा था। अब तो इंदिरा का अकेलापन और भी बढ□ गया था। उनके पिता ने इस बात को समझा और उन्हें पुणे के एक स्कूल में भर्ती करा दिया।

इंदिरा के रिश्ते के भाई-बहन भी वहीं पढ□ते थे। वे जल्दी ही सबसे घुल-मिल गईं।

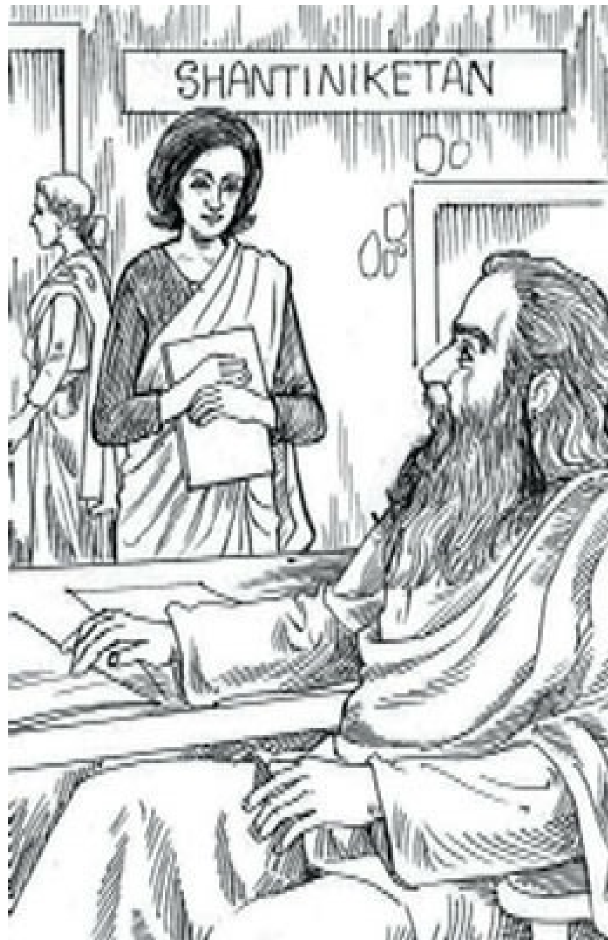


1934 में इंदिरा ने मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की। वे राजनीति की चर्चाओं में भाग लेतीं और इस विषय की पत्रिकाएं चाव से पढ□ती थीं।

इंदिरा गांधी जी से कई बार मिलीं और उनसे विशेष रूप से प्रभावित हुईं। उस समय गांधी जी पुणे की यरवदा जेल में थे।

शांति निकेतन में

इंदिरा कड□ी मेहनत में विश्वास रखती थी। जवाहरलाल चाहते थे कि वे मैट्रिक के बाद शांति निकेतन जाए और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के मार्गदर्शन में कुछ समय रहें। शांति निकेतन का वातावरण किसी आश्रम से कम नहीं था। हॉस्टल के नियम काफी कड□ थे और सभी को अपना कार्य स्वयं करना पड□ता था।



इंदिरा अपने पिता की इच्छा के अनुसार विद्याध्ययन के लिए शांति निकेतन आ गईं। यहां पर उन्होंने स्वयं को माहौल के हिसाब से ढाल लिया। वे यहां नंगे पाव रहतीं व खादी की साड□ी पहनती। वे छात्रावास के सभी नियमों का पालन करतीं। उन्होंने गुरुदेव की शिक्षाओं को ध्यान से सुना व ग्रहण किया।

मां का स्वर्गवास

एक दिन गुरुदेव ने उन्हें बुलाया और एक तार उन्हें दिया। तार इलाहाबाद से था। उनकी मां कमला नेहरू गंभीर रूप से बीमार थीं।

इंदिरा तत्काल इलाहाबाद रवाना हो गईं। वे मां को चिकित्सा के लिए जर्मनी ले गईं।

जर्मनी में ब्लैक फॉरेस्ट के एक सैनिटोरियम में कमला जी का उपचार होने लगा। इस उपचार से पहले तो उनके स्वास्थ्य में कुछ सुधार हुआ, लेकिन तबीयत फिर खराब होने लगी। ऐसा होने पर उन्हें स्विटजरलैंड ले जाया गया। यहीं पर लम्बी बीमारी के बाद 28 फरवरी, 1936 को कमला नेहरू का निधन हो गया।



उस समय इंदिरा की आयु 18 वर्ष थी। उन्हें गहरा सदमा लगा। जवाहरलाल उन्हें कई जगह ले गए। प्राकृतिक सुंदरता से इंदिरा के मन को ताजगी मिली, पर अब भी वे उदास थीं।

अब जवाहरलाल उन्हें आगे की पढ□ाई के लिए लंदन ले गए। इंदिरा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ□ने लगीं।

फिरोज से विवाह

इंदिरा स्वदेश लौटने को व्याकुल थीं, इसलिए वे कॉलेज की डिग्री लिए बिना ही एक मिलिट्री जहाज से भारत लौट आईं।



भारत आते ही वे देहरादून में पिता से मिलने गईं। उस समय पिता देहरादून जेल में थे। उन्होंने कहा कि वे फिरोज से विवाह करना चाहती हैं।

यह सुनकर जवाहरलाल दंग रह गए। उन्होंने इंदिरा को सलाह दी कि वे विवाह का विचार त्याग दें। जब इंदिरा नहीं मानी तो पिता को भी स्वीकृति देनी पड□ी।

नवदंपती जेल में

उस समय अंग्रेजों ने भारत में सार्वजनिक सभाओं पर रोक लगा रखी थी । इस पाबंदी के बावजूद इंदिरा ने विवाह के फौरन बाद इलाहाबाद में एक सार्वजनिक सभा में भाग लिया। वे भाषण देने लगीं तो पुलिस ने रोकना चाहा। फिरोज भी वहां उपस्थित थे।

पुलिस ने उन दोनों को बंदी बना लिया। उन्हें नैनी जेल में ले जाया गया।

इंदिरा जेल में अपनी बुआ विजयालक्ष्मी पंडित व लालबहादुर शास्त्री जी से मिलीं। इनके अलावा वहां और भी कई राजनेता थे।

राजीव व संजय का जन्म

समय तेजी से बीतता रहा। इंदिरा नौ माह बाद जेल से रिहा हुईं। कुछ माह बाद फिरोज भी रिहा हो गए। वे इंदिरा के साथ आनंद भवन में ही रहने लगे।

एक दिन उन्हें पता चला कि इंदिरा मां बनने वाली हैं। इंदिरा की बुआ ने राय दी कि वे उनके पास बंबई आ जाए, क्योंकि आनंद भवन में उनकी देखभाल के लिए कोई नहीं था।

20 अगस्त, 1944 को इंदिरा ने पुत्र को जन्म दिया। उस समय भी जवाहरलाल जेल में थे। इंदिरा ने नवजात शिशु को नाम दिया 'राजीव गांधी', जो आगे चलकर भारत के सबसे कम आयु के प्रधानमंत्री के रूप में जाने गए।

इंदिरा 6-7 माह बाद इलाहाबाद लौटी। उस समय तक जवाहरलाल जेल से रिहा हो चुके थे और स्वतंत्रता संग्राम का संघर्ष जोरों पर था।

फिरोज लखनऊ आए और किराए के मकान में रहने लगे। इंदिरा व राजीव उनके साथ थे। जवाहरलाल नेहरू दिल्ली में अंतरिम सरकार के गठन में व्यस्त थे। कभी-कभी वे लखनऊ आ जाते थे।



इस दौरान, 1946 में जवाहरलाल जी ने दिल्ली में एक मकान खरीद लिया। इंदिरा अपने पुत्र राजीव के साथ दिल्ली आ गईं तथा वहीं रहने लगीं।

अपनी व्यस्तता के बावजूद इंदिरा ने पुत्र के लालन-पालन में कोई कमी न आने दी। उन्होंने एक अनुभवी महिला को राजीव की गवर्नेस के रूप में नियुक्त किया।

14 दिसंबर, 1946 को इंदिरा ने दूसरी संतान को जन्म दिया जिसका नाम संजय गांधी रखा गया।

तीनमूर्ति भवन में

प्रधानमंत्री पद मिलने के बाद नेहरू जी को तीनमूर्ति भवन में सरकारी आवास मिला। वहां वे इंदिरा व उनके दो पुत्रों के साथ रहने लगे। इंदिरा दोनों बच्चों के साथ-साथ नेहरू जी की भी देख-रेख करती थीं।



फिरोज यह बात अच्छी तरह समझते थे कि इंदिरा नेहरू जी के ऑफिस संबंधी कामों में

हाथ बंटाती थीं, इसलिए उनका वहां रहना जरूरी था।

एक समाजसेविका

इंदिरा समाजसेवा में विशेष रुचि रखती थीं। एक दिन वे कुछ खरीदारी करने कनॉट प्लेस गईं। वहां उन्होंने एक फटेहाल लड□के को कंघियां बेचते देखा। उस लड□के ने पास आकर इंदिरा से कंघी खरीदने का आग्रह किया। इंदिरा जहां भी जातीं, लड□का पीछे-पीछे आ जाता, तब इंदिरा ने एक कंघी खरीद ली। वे उसके दृढ□ संकल्प से प्रभावित हुईं।



उन्होंने पूछा, “क्या तुम स्कूल जाते हो ?”

“मुझे दो वक्त पेट भरने के लिए कड□ी मेहनत करनी पड□ती है। स्कूल जाने का समय नहीं होता।” लड□के ने कहा।

इंदिरा उसी के बारे में सोचते हुए घर लौट आईं। उन्होंने फिरोज के साथ सलाह की कि बच्चों के लिए एक संस्था खोलनी चाहिए। फिरोज ने अपनी सहमति दे दी और फिर ‘बाल

सहयोग' नामक संस्था की स्थापना हुई। इस संस्था में बच्चे विविध व्यावसायिक कार्य करके आजीविका कमा सकते थे।

पति का निधन

1960 में इंदिरा नेपाल यात्रा पर थीं। वहां उन्हें समाचार मिला कि फिरोज को हृदय का दौरा पड□ा है। वे तत्काल दिल्ली लौटी।



ईश्वर की कृपा व उनकी सेवा से फिरोज स्वस्थ हो गए।

इंदिरा उन्हें जलवायु परिवर्तन के लिए कश्मीर ले गईं। उनके स्वास्थ्य में सुधार होने पर कुछ समय बाद वे दिल्ली आए।

कुछ समय बाद फिरोज को दूसरा दौरा पड□ा। इस बार भी इंदिरा साथ नहीं थीं। खबर मिलते ही वे तत्काल पहुंच गईं, पर इस बार ईश्वर की कुछ और ही इच्छा थी। 8 सितंबर, 1960 को फिरोज गांधी का निधन हो गया।

इंदिरा कांग्रेस अध्यक्ष

1959 में वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष चुनी गईं। वे दल की चौथी महिला अध्यक्ष थीं।

पिता का स्वर्गवास

1962 में भारत को चीन युद्ध में काफी हानि हुई। नेहरू चिंताग्रस्त थे। 1964 में उन्हें पक्षाघात हो गया। इंदिरा जी की सेवा से वे कुछ ही समय में पुन: स्वस्थ हो गए।

अब वे वृद्ध हो चले थे। 26 मई, 1964 को उन्होंने देर रात तक काम किया। सुबह उठे तो वे बीमार दिख रहे थे। इंदिरा ने फौरन डॉक्टर बुलवाया, पर नेहरू जी को बचाया न जा सका।

अब कांग्रेस नेताओं की यह जिम्मेदारी थी कि वे नेहरू का उत्तराधिकारी चुनें। उन्होंने एकमत से इंदिरा जी को अपना नेता चुना, किंतु उन्होंने मना कर दिया, तब श्री गुलजारी लाल नंदा को कार्यवाहक प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई गई।

कुछ दिन बाद लाल बहादुर शास्त्री कांग्रेस संसदीय दल के नेता चुने गए। उन्होंने इंदिरा को सूचना व प्रसारण मंत्रालय का भार सौंपा। इंदिरा जी ने सकुचाते हुए स्वीकृति दे दी। इसके बाद वे राज्य सभा के लिए भी चुनी गईं।

भारत-पाक युद्ध व लालबहादुर शास्त्री का निधन

ताशकंद में संधि के पश्चात शास्त्री जी को दिल का दौरा पड□ा और उनकी वहीं मृत्यु हो गई।

एक बार फिर से प्रधानमंत्री पद खाली था। राजनीति के कई बड□ चेहरे अपने नाम का दावा कर रहे थे, किंतु इंदिरा इनमें शामिल नहीं थीं।



प्रधानमंत्री पद के चुनाव के लिए एक दिन निश्चित हुआ और इंदिरा जी को सबने अपना नेता चुन लिया।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी

इंदिरा गांधी 24 जनवरी, 1966 को भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं।

वे एक दिन में 16 से 18 घंटे तक लगातार कार्य करतीं। संसद सत्र आरंभ होने के बाद तो वे पूरी-पूरी रात ऑफिस में ही काम करतीं।

अमेरिका यात्रा में उनका भव्य स्वागत हुआ। अमेरिका के राष्ट्रपति लिंकन वी. जॉनसन उनसे मिलने भारतीय दूतावास पहुंचे।

इंदिरा ने लंदन, पेरिस और मास्को यात्रा की।

भारत की समस्याएं दिन-प्रतिदिन जटिल होती गईं। ऐसे हालात में विपक्षी दल राजनीतिक दांव खेलने लगे।



इंदिरा ने अपना नामांकन पत्र रायबरेली से भरा व भारी मतों से विजयी रहीं। 12 मार्च, 1967 को वे एक बार फिर कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष चुनी गईं।

1971 के आम चुनाव

उन दिनों पूर्वी पाकिस्तान में उपद्रव हो रहे थे। पाकिस्तानी सेना निर्दोषों पर जुल्म ढाने लगी। लाखों लोग सीमा पार कर, शरण लेने के लिए भारत में आ गए।

इस दौरान पाकिस्तान ने भारत पर हमला कर दिया। भारतीय सेना बहादुरी से लड□ी और इस युद्ध में पाकिस्तानियों को घुटने टेकने पड□े। इस युद्ध के बाद ही बांग्लादेश का जन्म हुआ।

1971 के संसदीय चुनावों से पहले ही प्रमुख नेताओं ने कांग्रेस को त्याग दिया था, पर देश अब भी इंदिरा पर भरोसा करता था। उन्होंने उसी भरोसे के बल पर इंदिरा को फिर से विजयी बनाया। कांग्रेस 350 सीटों से विजयी रही। यह गरीबी हटाओ के नारे का जादू था।

आपातकाल की घोषणा

समय बीतता गया। कुछ समय बाद इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा के चुनाव को अवैध घोषित कर दिया, लेकिन उन्होंने पीछे हटने से इंकार कर दिया और सुप्रीम कोर्ट में इस फैसले के खिलाफ अपील कर दी।

देश की स्थिति अस्थिर और गंभीर होते देख उस समय इंदिरा ने एक अभूतपूर्व कदम उठाया। 25 जून, 1975 को उन्होंने देश में 'आपातकाल' की घोषणा कर दी। सभी विपक्षी दलों ने आपातकाल का कड□ा विरोध किया। इस पर विपक्षी दलों के नेता बंदी बना लिए गए। इंदिरा के छोटे पुत्र संजय गांधी आपातकाल के दौरान तेजी से देश के राजनीतिक पटल पर उभरकर सामने आए।

इंदिरा ने देशवासियों के कल्याण के लिए बीस सूत्रीय कार्यक्रम की घोषणा की। संजय ने भी पांच सूत्रीय कार्यक्रम की घोषणा कर दी।



आपातकाल में स्थिति पर पर काबू पा लिया गया। राष्ट्रविरोधी मीसा के तहत पकड□ गए राजनेता नियंत्रण में आ गए। सरकारी मशीनरी सही तरह से काम करने लगी व आम जनता की भलाई के लिए कई तरह की योजनाएं लागू की गईं।

1977 के आम चुनाव

19 माह के आपातकाल के बाद इंदिरा ने अंततः आम चुनावों की घोषणा की। इस समय सभी विपक्षी नेता रिहा कर दिए गए।

इसी दौरान राजनीतिक मंच पर जयप्रकाश नारायण प्रकट हुए। सभी विपक्षी दलों ने उन्हें नेता माना और सभी राजनैतिक दलों के मिले-जुले मोर्चे का नाम रखा गया जनता पार्टी। इस आम चुनाव में जनता पार्टी ने जीत हासिल की। इंदिरा रायबरेली में राजनारायण से पराजित हो गईं।

पुनः शक्तिशाली होकर प्रकट होना

मोरारजी देसाई नए प्रधानमंत्री बने, किंतु जनता पार्टी अपने भीतरी संघर्ष के कारण सही तरीके से सरकार नहीं चला सकी। मोरारजी ने त्यागपत्र दे दिया और इंदिरा जी के समर्थन से चौधरी चरण सिंह नए प्रधानमंत्री बने। उनकी चतुर राजनीति के बल पर चौधरी चरण सिंह ने एक दिन के लिए भी कभी संसद का सामना नहीं किया। उन्होंने इससे पूर्व ही पद से त्यागपत्र दे दिया।



1980 के आम चुनावों में जनता ने एक बार फिर इंदिरा जी पर भरोसा दिखाया। कांग्रेस 'आई' की जीत हुई और इंदिरा फिर से देश के प्रधानमंत्री पद पर विराजमान हुईं।

इस दौरान उनके छोटे पुत्र संजय की एक विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इंदिरा जी बहुत व्याकुल हुईं, किंतु फिर भी उन्होंने स्वयं को किसी तरह संभाल लिया।

जब हमारे वैज्ञानिकों ने पोखरण में सफल परमाणु परीक्षण किया तो जनता ने भी भारत का लोहा मान लिया। इंदिरा जी की और भी अनेक उपलब्धियां रहीं, पर असम व पंजाब की

समस्या ने उग्र रूप ले लिया था और भारी संख्या में निर्दोष लोग आतंकवादियों के हाथों मारे जाने लगे थे।



इन्हीं अव्यवस्थाओं के बीच दिल्ली में सफलतापूर्वक एशियाई खेल संपन्न हुए। यह भारत की एक और उपलब्धि थी।

इंदिरा जी के कार्यकाल में ही राकेश शर्मा अंतरिक्ष तक जाने वाले पहले भारतीय बने। इंदिरा जी ने उनसे बात भी की। यह उनके लिए एक बड□ी उपलब्धि थी।



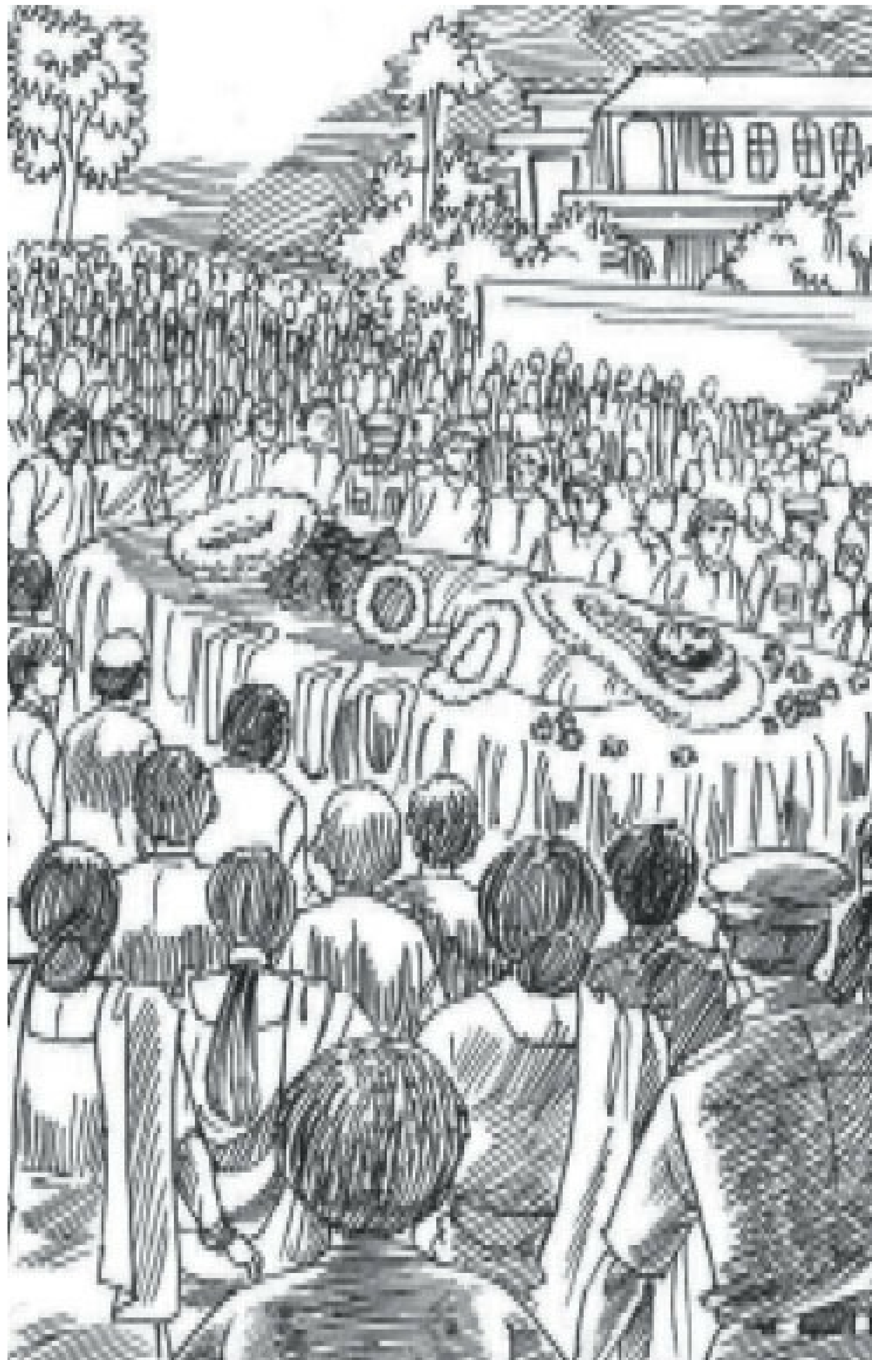
अब तक इंदिरा जी एक अंतर्राष्ट्रीय नेता के रूप में स्थापित हो चुकी थीं।। वे नॉन-एलाइन मूवमेंट की नेता बनीं। 1983 में दिल्ली में ही इन राष्ट्रों की सभा भी हुई।

पंजाब में आतंकवादी

सफलताएं हमेशा साथ नहीं देतीं। देश-भर में अराजकता फैली हुई थी। उत्तर-पूर्व और पंजाब में अव्यवस्था फैली हुई थी। आतंकवादियों ने अपने अस्त्र-शस्त्रों सहित गुरुद्वारों में शरण ले रखी थी।

स्वर्ण मंदिर भिंडरवाला के लिए गढ□ बन गया था। 1984 तक पंजाब की स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई। निर्दोषों का बहता लहू देख इंदिरा जी से रहा न गया। इधर पाकिस्तान आतंकवादियों की पूरी सहायता कर रहा था।

देश की अखंडता खतरे में थी और कोई उपाय नहीं बचा तो इंदिरा जी ने सैनिकों को आदेश दिया कि वे आतंकवादियों को उनके गढ□ स्वर्ण मंदिर से खदेड□ दें।



भारतीय सेना व आतंकवादियों में भयंकर युद्ध हुआ। सेना से कहा गया कि वे पवित्र स्थल की गरिमा बनाए रखें।

लंबे युद्ध के बाद आतंकवादी मारे गए और कई बंदी बना लिए गए।

स्वर्ण मंदिर से अस्त्र-शस्त्रें का भंडार मिला। इस युद्ध में उस स्थान को भी नुकसान पहुंचा। सिख समुदाय ने इंदिरा जी को उनके पवित्र स्थल को हानि पहुंचाने के लिए दोषी ठहराया, पर इंदिरा जी विवश थी। राष्ट्र के हित में वह कदम उठाना आवश्यक था।

अंगरक्षकों द्वारा हत्या

ऑपरेशन ब्लूस्टार के बाद सिख आतंकवादियों द्वारा इंदिरा जी को जान से मारने की धमकियां मिलने लगीं। उनसे कहा गया कि वे अपने आंतरिक सुरक्षा घेरे से सिखों को हटा दें, पर उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया।

अक्टूबर का आखिरी दिन था- सुबह 9:15 का समय था। इंदिरा जी सफदरजंग स्थित कार्यालय में जा रही थीं। एक आयरिश पत्रकार पीटर उस्तीनोव अपनी टीम के साथ उनके इंटरव्यू के लिए मौजूद था। जब इंदिरा जी अपने बंगले का गेट पार कर फुटपाथ से जा रही थीं तो उनके ऑफिस के पास वाले दरवाजे पर खड□ सुरक्षाकर्मी ने उन पर अंधाधुंध गोलियां बरसा दीं।

उनकी बहू सोनिया गांधी तत्काल उन्हें एम्स ले गईं।

एम्स के बाहर भारी भीड□ जमा थी। पूरा राष्ट्र क्रोध में था। लोगों का पारा चढ□ने लगा और हिंसा की वारदातें शुरू हो गईं।

डॉक्टरों के अथक प्रयास भी किसी काम नहीं आए। उन्होंने 2:30 बजे इंदिरा जी को मृत घोषित कर दिया।

पूरा राष्ट्र शोक में डूब गया। लोगों के क्रोध का ज्वालामुखी फूट पड□ा। चारों ओर लूट, कत्ल व आगजनी की वारदातें होने लगीं।

जब इंदिरा जी के पुत्र राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद लोगों से शांत रहने की अपील की तो किसी तरह दंगे बंद हो सके। उन्होंने सेना को भयंकर दंगों वाले इलाकों में मार्च का हुक्म दिया। जल्दी ही स्थिति काबू में आ गई।

इस दौरान तीनमूर्ति भवन के बाहर लाखों लोग दिवंगत प्रधानमंत्री को श्रद्धांजलि देने पहुंच रहे थे। 3 नवंबर, 1984 को 3:50 बजे शांतिवन के समीप उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

इस तरह स्वतंत्र भारत के इतिहास का एक महान अध्याय समाप्त हो गया।

शक्ति स्थल

शक्ति स्थल भारत की पहली व एकमात्र महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी का समाधि स्थल है। उनके समाधि स्थल को 'शक्ति स्थल' का नाम दिया गया यानी 'शक्ति का स्थल'। एक सलेटी-लाल पत्थर उस स्थान पर लगाया गया है, जहां उनका अंतिम संस्कार संपन्न हुआ था।

इंदिरा मेमोरियल संग्रहालय

इंदिरा गांधी मेमोरियल संग्रहालय भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी का आवास था। वहीं 31 अक्टूबर, 1984 को उनके सुरक्षाकर्मियों ने गोली मारकर इंदिरा जी की हत्या कर दी थी। उनकी हत्या के बाद उस स्थान को संग्रहालय में बदल दिया गया। उस संग्रहालय में उनके निजी प्रयोग की वस्तुएं बड□ी ही जतन से संभाली गई हैं।

हत्या के दौरान उनके द्वारा पहनी गई साड□ी, राष्ट्रवादी आंदोलन के कुछ दुर्लभ चित्रों का संग्रह, नेहरू-गांधी परिवार के निजी क्षणों और महात्मा गांधी के साथ उनके बचपन की तस्वीरें इस संग्रहालय में प्रदर्शन के लिए लगाई गई हैं।

संग्रहालय में इंदिरा गांधी के पुत्र राजीव गांधी के जले हुए वस्त्र भी रखे गए हैं, जो उन्होंने हत्या के समय पहने हुए थे।



राजीव गांधी भी भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री थे। उनके द्वारा खींचे गए कुछ खुशनुमा व यादगार पलों के चित्र भी वहां मौजूद हैं। संग्रहालय के बाहर बाग में वह स्थान है, जहां इंदिरा जी गोली लगने के बाद गिरी थीं। वहीं खून के धब्बे को कांच के बॉक्स में सहेज दिया गया है। प्रवेशद्वार पर टंगी उनके द्वारा लिखी गई अंतिम पंक्तियां पढ□ना न भूलें। इससे देश व देशवासियों के प्रति उनके प्रेम का परिचय मिलता है। इससे पता चलता है कि वे मातृभूमि को प्राणों से भी बढ□कर प्रेम करती थीं।

■■■